धर्माधर्मविचार ॥

जिसमें

मन्वादि महर्षि प्रणीत धर्माधर्म का सारांश
वर्णित है.

जिसको

श्रीमान् तीर्थ गुरु स्योजीरामजी मोजीरामजी
के वंशोद्भव साबिक के म्यूनीसिपिल
कमिश्नर ऋषिकुल सेक्रेटरी.

पण्डित ताराचन्द शर्मा

श्रीहरिद्वार कनखल निवासी ने सर्व साधारण
सज्जन महज्जनों के अवलोकनार्थ बड़े
परिश्रम से निर्माण किया है.

प्रथम वार
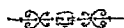
लखनऊ
सुपरिंटेंडेंट बाबू मनोहरलाल भार्गव बी. ए., के प्रबन्ध से
मुंशी नवलकिशोर सी. आई. ई., के छापाखाने में छपा
सन् १९१२ ई० ॥

भूमिका ॥
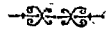
मैं ता० २७ फर्वरी सन् १९१२ में बिहार प्रान्त के रईस यजमानों से मिलने गया। इधर उधर भ्रमण करते हुए अनेक प्रकार के विचार मेरे हृदय में सनातनधर्म की वर्त्तमानदशा देखकर उठे। नवयुवकों की धर्म में अरुचि, तथा हिन्दूजाति के धनका व्यर्थ व्यय जो विवाहादि शुभ अवसरों में होता है; जिसका फल ऐश में पड़कर धन और धर्म्म तथा [illegible]

देशकजी के उपदेश से स्थापन किया। उसकी त्रुटियों क
सुधार हो स्वार्थता दूर हो एक व्यक्ति उसका मालिक न हो वह
सर्वसाधारण सनातन हिन्दूमात्र की सम्पत्ति है इसलिये मैंने
भी जितना होसका; उस में जी तोड़ परिश्रम कर उसका हि
साब ठीक किया ताकि लोग उस पर श्रद्धा और विश्वास
करें। दिन प्रति दिन उन्नति के शिखर पर चढ़ें जबतक
एकही की आज्ञा से ऋषिकुल चलेगा तबतक कोई सज्जन
उसका भक्त न बनेगा। यही कारण है कि मैं तथा महोपदे
शकजी और अन्य कई महाशय उससे एक प्रकार तटस्थ
से रहते हैं। ऋषिकुल का भी सुधार हो यहभी हमारा उद्देश
है। इसी हेतु इसका वर्णन इस पुस्तक में आया है। जो कुछ
त्रुटि इस पुस्तक में भी पाईजावे; सज्जन मुझे लिखें
शोधी जावेगी। भूल चूक विद्वज्जन क्षमा कर सारभाग
ग्रहण करेंगे।

स्थान हरिद्वार,
संवत् १९६६

शुभचिन्तक
ताराचन्द

समर्प्पण॥

श्रीमान् मुन्शीनवलकिशोर साहब सी० आई० ई०, स्वर्ग
वासीजी के सुपुत्र रायबहादुर मुन्शीप्रयागनारायण साहब
मालिक प्रेस लखनऊ को आशीर्वाद पुष्पाञ्जलिरूप य
पुस्तक सादर समर्प्पित है।

शुभचिन्तक
ताराचन्द

श्रीगङ्गायै नमः ।

धर्माधर्मविचार ॥

सत्यंब्रूयात्प्रियंब्रूयान्न ब्रूयात्सत्यमप्रियम् ।
प्रियञ्च नानृतं ब्रूयादेष धर्मः सनातनः ॥
(भगवान् मनुः)

स्वधर्मेनिधनंश्रेयः परधर्मोभयावहः ॥

शिक्षा (१) अपने धर्म की मर्य्यादा पालन करते हुए किसी भी धर्म की निन्दा न करना और प्राणान्त होने पर भी अपने धर्म को न बदलना, अपने धर्म की प्रथम शिक्षा पाकर तब अन्य विद्याओं का पढ़ना मनुष्यमात्र को लाभदायक है।

धर्म कर्म दोउ खंभ हैं सर्व ज़गत आधार ।
धर्म विना नहिं पावहीं नर भव सरिता पार ॥

शिक्षा (२) वर्तमान समय में अपनी सन्तानोंको विद्याध्ययन के लिये बहुधा लोग विशेष ध्यान नहीं रखते। उनके विवाहादि उत्सवों में हज़ारों रुपये वेश्यानृत्य—आतश-बाज़ी—बाग़वाड़ी—बखेर आदि में व्यर्थ लुटाकर अपने अबोध बालकों के गले में मानो अपने हाथ से कुकर्मों

की ज़ंजीर पहिनाते हैं। यदि उस धन से उन्हें शिक्षा देते तो कितना उपकार होता। सन्तान को मूर्ख रखना माता पिता का उस से शत्रुता करना है।

माता शत्रुः पिता वैरी याभ्यां बालो न पाठ्यते।
न शोभते सभामध्ये हंसमध्ये बको यथा ॥

शिक्षा (३) जब ऋण बढ़गया नालिश हुई तब वह नाक और मिथ्या प्रतिष्ठा कहां गयी ? जब मुनादी के द्वारा बाज़ार में प्रतिष्ठा बढ़ाईगयी; ऋण मनुष्य का सर्वनाश करदिया करता है (तभी लिखा है)

"ऋणकर्त्ता पिता शत्रुः"

अर्थात् ऋण करनेवाला पिता शत्रु के समान है।

शिक्षा (४) विद्याप्रचार के लिये प्रत्येक नगर तथा प्रान्तों में ब्रह्मचर्य्याश्रम स्थापन करके ऋषिकुलशाखा बनाइये। विद्यारूपी अमृत प्याला पिलाकर पूर्ण सनातनधर्म्मावलम्बी अपनी सन्तानों को बनाइये जिससे भारतवर्ष में घर २ धर्मका नकारा बजे विद्यादान सब दानों में श्रेष्ठ है।

सर्वेषामेवदानानां ब्रह्मदानं विशिष्यते।
(भगवान् मनुः)

शिक्षा (५) सुपुत्र विद्वान् पुत्र अपने पुरुषाओं के ऋण को उतारता है सर्वत्र सन्मान पाता है लक्ष्मी उसके चरणों तले रहती है।

'विद्वान् सर्वत्र पूज्यते।'

विद्याददातिविनयं विनयाद्यातिपात्रताम्।

पात्रत्वाद्धनमाप्नोति धनाद्धर्मस्ततः सुखम् ॥

शिक्षा (६) जिसने बाल्यावस्थामें विद्या पढ़ली उसका युवावस्था में अवश्य प्रकाश होगा । यदि शिक्षा विचार कर उत्तमता से दीजायगी तो विद्यार्थी देशमें प्रतिष्ठा पावेगा सारे पदार्थ हस्तामलकवत् प्राप्त हैं । जिन्होंने प्रथम अवस्था वृथा गँवादी, उनका जीवन बिगड़ गया । धक्के खाते हुए घर घर मारे फिरते हैं । जैसे जगत् में आये वैसेही कोरे गये ।

प्रथमेनार्जिताविद्या द्वितीयेनार्जितंधनम् ।
तृतीयेनार्जितोधर्मश्चतुर्थेकिंकरिष्यति ॥ १ ॥

सनातनधर्म्मावलम्बियोंका भारतनें प्रताप।

शिक्षा (७)देखिये यूरोपवासी अंग्रेजोंको जो अपने सनातनधर्मरीति (देशरीति) पर कैसे चलते हैं । अपने देश के खान–पान–पहरावे को नहीं त्यागतेहैं। किसी रूपवान् स्त्री को चाहे कैसीही सुन्दर क्यों न हो निगाह उठाकर नहीं देखते । आलस्य इनके पास नहीं फटकता । बाल्यावस्था से ब्रह्मचर्य्य रखते हैं । छोटी २ अवस्था में विवाह होनेकी कुरीति भी नहीं है, इसी विद्या आदि पूर्वोक्त शुभगुणों से भारत का शासन वर्त्तमान ब्रिटिश गवर्नमेण्ट द्वारा कैसा उत्तम होरहा है जिसमें शेर और बकरी एकही घाट पानी पीती है। परमात्मा और श्रीगंगा महारानी इस अंग्रेजराज्य को अटल करें। श्रीराजराजेश्वर पंचम जार्जकी आयु [illegible]

आनन्दित करदिया । इस राज्य में प्रजा अपना २ कर्त्तव्य धर्म पालन करतीहुई राजराजेश्वर की जय मनाती है। रेलगाड़ी द्वारा तिजारत का द्वार खुल गया देश देशान्तरों में यात्रा होनेलगीं। पूर्वसमय में भ्रमण करना कितना कठिन था; आज सर्वत्र व्यापार से देश चमक उठा राजा को ईश्वर-अंश हमारे धर्म में माना है। इसी से राजभक्ति करना हिन्दूमात्र का धर्म है। भगवान् श्रीकृष्णचन्द्र कहते हैं:—

"ऐरावतोगजेन्द्राणां नराणांच नराधिपः"

मतमतान्तर ।

शिक्षा (८) इस जगत् में अनेकानेक मत चिरकाल से हैं। सैकड़ों मत चले और अब उनमें से बहुतों का नाम तक नहीं है। इसी भारत में कितने मत और सम्प्रदाय इस समय में हैं। परस्पर एक दूसरे की निन्दा और खंडन करते हुए अनैक्यता (फूट) का बीज बोरहे हैं। उत्तम वही हैं जो किसी का खण्डन मण्डन निन्दा न करके अपने २ इष्टदेव का भजन करते हुए परस्पर प्रीतिभाव रखते हैं। अपने सनातनधर्म्म पर चलते हुए राजा के शुभचिन्तक बने हुए हैं।

सनातनधर्मावलम्बीही राजभक्त हैं।

शिक्षा (९) राजाको ईश्वरभावसे मानना सनातनधर्मके समस्तग्रंथों में लिखाहै। जो राजभक्त नहीं हैं वे सनातन धर्मसे रहित पतित पुरुष हैं। राजभक्ति चिरकाल से सनातन हिन्दुओंकी नस २ में समारही है। सनातन

मर्य्याद में चलनेवाले सनातन हिन्दू हैं; जो माता-पिता-गुरू-आचार्य्य-पुरोहित आदि बड़ों की सेवा करते हैं; सन्तोष जिनका धन है, किसी से राग-द्वेष नहीं रखते। सारे संसार का उपकार करते हैं; वही सनातनधर्मी हैं।

धर्मरूपी गठरी किनके साथ जायगी।

शिक्षा (१०) विना अपने प्रभु परमात्मा को समर्पण किये किसी भी वस्तु को अपने व्यवहार में न लाना सनातन-धर्मियों का एक धर्म और भक्ति का भाव है। अर्थात् सब पदार्थ को प्रसादी करके पाना ऐसे धर्मात्माओं की हुंडी बीच बाज़ार में चलरही है। जो दूसरों के कष्टनिवारण के लिये स्थान २ पर धर्मशाला बनवाते, सदावर्त्त बैठाते, कुंवे खुदवाते, पुल बनवाते, औषधालय स्थापन कराते, सड़कें सुधराते, बग़ीचे लगवाते, पाठशाला खुलवाकर विद्यादान देते, मन्दिर और देवालयप्रतिष्ठा करते, तीर्थयात्रियों को-जो धनहीन हैं उन्हें-रेल तथा जहाज़ों के टिकिट दिलवाते, अनाथों का पालन पोषण करते, कन्याओं का विवाह करादेते, जीवरक्षा के लिये पिंजरापोल खोलते आदि २ परोपकारों में धन दान कर अपनी कमाई को सफल करनेवालेही सनातनधर्म्म के रक्षक हैं। उन्हीं का यश सदा रहेगा।

धर्म न पावक में जरे नाम काल नहिं खाय ॥
या दुनिया में आयके करलीजे द्वै काम।

देबे को टुकड़ा भला लेबे को हरिनाम ॥

ऐसेही धर्मात्माओं के द्वार पर लाखों मनुष्यों का उपकार होता है। ऐसेही दानी पुरुषों की नाव इस भवसागर से शीघ्र पार लगती है। ऐसेही सत्पुरुषों को ईश्वर के दरबार में ऊंचा आसन मिलता है। ऐसोंही कें पुण्य का फल उत्तम औलाद होती है। सन्ततिःपुण्यमाख्याति— सन्तान को देखकरही मनुष्य का पुण्य जानाजाता है। जिस समय मनुष्य का पुण्य क्षीण होता है तो वंश में कुपुत्र उत्पन्न होते हैं जो कुकर्म आदि में संचित धन का नाश करते हैं।

शिक्षा (११) सदा समय एकसा नहीं होता। इसी से धर्मात्मा लोग संसार को नश्वर जान अपनी चलती में खज़ाना अपने संग लेजाने का उद्योग करते हैं—जिस में अन्त में पछताना न पड़े।

मृतंशरीरमुत्सृज्य काष्ठलोष्टसमं क्षितौ।
विमुखाबान्धवायान्ति धर्मस्तमनुगच्छति ॥ १ ॥

धर्म्म का डंका बजाकर बतारहा है।

शिक्षा (१२) जिन्होंने अपना धर्म छोड़दिया और कुलमर्य्याद त्यागदी, माता पिता तथा गुरुजनों की आज्ञा भंग करदी, अपने धर्मस्थानोंको नष्ट करदिया, अपनी धर्मपत्नी को त्यागा उन्होंने अपना धर्मजीवन वृथा गँवादिया।

कुसंग से हानि।

शिक्षा (१३) जो नीच कुसंग में फँसो तो उभयलोक नष्ट हुए

जिह्वा के स्वाद भक्ष्याभक्ष्य सेही यमद्वार के दर्शन होते हैं ।

मद्यपान-जुवा-पराया धन-हरण आदि पाप कुसंग केही प्रताप से होते हैं ।

जवानी की उमंग में वेश्या के कुसंगवश बड़ी २ आपत्तियां भोगनीपड़ती हैं । जब वह वेश्या धन हरण करलेती है तब सब खुशामदी मित्र भी त्यागदेते हैं । वही वेश्या बात तक नहीं करती है । जिस वेश्यारूपी अग्नि में धन-यौवन-कुल, मर्यादा आदि की आहुति दी थी । हकीमों के दर्वाज़े झांकते फिरते हैं । वही धर्मपत्नी जिसका उस वेश्या के प्रेमकाल में अनादर किया था, आज अपने कुलदेवताओं को मनाती फिरती है कि मेरे पति आरोग्य होजावें । शरीर में दुर्गंध आरही है, कोई पास बैठाना नहीं चाहता, पैसा पास नहीं, मानों यहीं रौरवनरक का भोग होरहा है इत्यादि अनेक दोष कुसंग से मनुष्यों में लग जाते हैं ।

नीचसाथ बुध नीच है समसों रहे समान ।
बड़े साथ दिन २ बढ़े पण्डित कहैं प्रमान ॥

हे प्यारे, बताओ तो सही इस वेश्याप्रसंग से तुमने क्या लाभ उठाया? धन गया-बल गया-प्रतिष्ठा गयी वंश का लोप हुआ जिन्होंने तुम्हारा माल उड़ाया था वे मित्र भी पास नहीं आते । देखो स्त्री विलाप करती है ।

रागनी-पिया तुमने कहा नहीं माना (टेक)

कहां गये वह मित्र तुम्हारे जो सुनतेथे नितगाना ॥
वह रंडी पास नहिं आती जिन लूटा तेरा खजाना ।
वंशलोप भयो येहि कारन बरनों कहा दुख नाना ॥
ताराचन्द सत्संग करो अब भजो यशुदा का कान्हा॥१॥

रागनी—कालिंगड़ा—धर्मपत्नी का विलाप ।

लगन लगी उस राम से मेरी । (टेक)
दीनानाथ दुख बिदारन बिपतने मोहिं घेरी ॥
नहिं जनमो कोइ पुत्र हमारो जीऊं का मुख हेरी ।
यह बिपता अब सही नहिं जाती क्यों करी प्रभु देरी॥

हे पति देव ! जिस वीर्य्यरूपी असूल्य रत्न से लाल प्रकट होते उसे व्यर्थ नष्ट करदिया । अब चारों तरफ़ सुगंध देनेवाली वास्मती कहां से उपजेगी ? आप के शरीर की यह गति हुई । चारपाई पर पड़े तड़फ रहे हो, घर में पैसा नहीं, कोई पास आता नहीं । मैं अबला क्या करूं ? मेरे शरीर पर आभूषण तक आपने नहीं छोड़े; जिन्हें बेचकर ही कुछ निर्वाह होजाता । हाय !! आपके शरीर में मांस नहीं रहा, केवल हड्डियों का पींजरा रहगया । मैं क्या करूं, कहां जाऊं, विधाता इस दुख से उठाले ।

शिक्षा (१४) इस कुसंग में अपनी सन्तानों को डालनेवाले बहुत से अदूरदर्शी पिता भी होते हैं । विवाहादि अवसरों में महफ़िल में अपने बालकों का हाथ पकड़ कर साथ लेजाते हैं । मानों उस कुकर्मरूपी स्कूल में

आप तो उस चंडालिन के पंजे में पड़ने चलेही थे साथ में अपने प्यारे होनहार बालक को भी लेचले अब तो वेश्या की तान में मस्त होगये चावके पानका बीड़ा रातभर गुजारदी। घर की सुध न रही प्रायः ऐसे मौक़ों पर घर में चोरियां भी होती हैं। आप रहे नाच तमाशे में, घर में सब चोर लेगये। यह शादीहुई कि बर्बादी ? बहुधा लड़के महफ़िलों में जाने से ही इस आपत्ति में पड़ जाते हैं। इसी लिये सज्जनों से निवेदन है कि कभी विवाहादि में वेश्या नाच आदि कर्म न कराना उचित है। इस से जो हानि होती है, वही ऊपर वर्णित है। इस के बदले अच्छे २ विद्वानों के व्याख्यान, होने उचित हैं। गायन में जानकी-मंगल रुक्मणी-मंगल, सूरपद-आदि भजन गवय्यों के हुआ करें। इसी से सुधार देश का होगा।

सत्यघटना का उल्लेख।

सूबे बिहार ज़िला पटना—गढ़मुहल्ला,

सम्बत् १९६८।

शिक्षा(१५) पूर्वोक्त स्थान में एक मन्दिर प्राचीन ठाकुर ब्रज-विहारीलालजी का जिसके पुजारी जगन्नाथदास, आयु ५० वर्ष की, एक मुसलमानी युवा वेश्या के प्रेमी होगये। इस वेश्या की अवस्था १५ वर्ष की थी। पन्द्रह वर्ष तक प्रेम रहा मंदिर की आमदनी, श्रीठाकुरजी का राग भोग आदि का सम्पूर्ण धन इसी वेश्या के प्रेम में खर्च करनेलगे। अन्ततः मन्दिर का सब असबाब

धीरे २ बेचकर इसी कुकर्म में देनेलगे। जब कुछ न रहा तब क़र्ज़ लेना प्रारंभ किया। श्रीठाकुरजी की ४० बीघा ज़मीन पक्की जिसकी आमदनी से राग भोग चलता था (कुछ मोहल्ले से आमदनी थी धीरे २ बेची इस जगह ज़मीन १००) सौ रुपया बीघा मिलती है) ६००) रुपये को बाइस बीघा ज़मीन मुसम्मात सिवदेई कुँवर के हाथ बेची। इन नौसौ रुपये में से पुजारीजी के पल्ले कुल तीनसौ ही पड़े। इन तीनसौ रुपयों को पाकर उस वेश्या के यहां फिर तर्पण प्रारंभ हुआ। जब यह रुपया उठगया वेश्या ने फिर मांगा, लगे बेचने बर्त्तन भांडा, अन्ततः कुछ न रहा सिवाय अस्थि-पंजर के! अब बाज़ार से उधार मिलना भी बंद होगया। लगे उस वेश्या से प्रार्थना करने।

हे लोंदी प्राणप्यारी! अब हम वृद्ध होगये हमारे पास पैसा नहीं रहा! अब कोई हमें अपने पास नहीं बैठाता; न कहीं कुछ उधार मिलता है। हम बड़े दुःख में हैं। जो कुछ था सर्वस्व तुम्हें देचुके; शरीर निर्बल होगया, मजूरी करके तुम्हें कुछ लाकर देने योग्य भी न रहे तुम हम से अप्रसन्न सी रहती हो, यह तुम्हें क्या उचित है? अब मेरा संसार में कौन है? तुम १५ वर्ष का प्रेम तोड़कर मुझ से मुखड़ा मोड़ती हो! अब तड़फा २ के मत मारो।

जवाब वेश्या का ॥ बिहाग ॥ पैसा मीत हमारा आह्नन (टेक) बिन पैसे प्रेम नहीं कछु जाने सब

संसारा। मैं गृहिणी नहीं ब्याहकी जो मानों हुकुम तिहारा॥ पैसा बिनु इस हाट में प्यारे चलता नहीं गुज़ारा। चोरी करो कहीं से लावो देओ दान हमारा॥ नाहिंन मार खायगा मेरी समझत नाहिं गमारा॥१॥

पुजारी का विलाप।

हाय प्यारी! मारडाला!! तू अधर में लटकाके धन-यौवन सर्वस्व लेकर अब इस प्रकार प्राण लेती है!!! प्रतिष्ठा गयी, ठाकुरसेवा-पूजा बन्द हुई, मैं यह नहीं जानता था कि तू मुझे बुढ़ापे में ऐसा धोखा देगी। अब तेरे कारण मुझे नगर छोड़नापड़ेगा। इतना कह उसके वहां से रोते हुए निराश होकर उठे; कुछ समय में मन्दिर का दिया गुल करके चेले को छोड़ नगर से निकल गये। पंचों ने फिर मन्दिर का प्रबन्ध पं० मुन्नालाल ब्राह्मण के पुत्र पुजारी अमरनाथजी के सिपुर्द किया। जब चेला भी गुरुजी के वियोग से तड़फ २ के मर-गया; तब लल्लूबाबूजी ने जो मन्दिरके पासही रहते थे, निम्नलिखित मुहल्ले के पंच एकत्रित किये। श्री बाबू हरीसिंहजी, श्री बाबू लालविहारीसिंहजी, और मियां अलीज़फ़रजी। चेले के बिस्तर में से सिर्फ १०) रु० निकले। सर्वसम्मति से चेले के मरने से पह-लेही इन पंचों ने मन्दिर अमरनाथ पुजारीजी के सिपुर्द किया।

चेलेका शरीर श्रीगंगाजीमें भस्म किया गया और पुजारीजी से कहा जो बंधान हम लोगों के वहां से

मिलता है उसी से ठाकुरसेवा करो । मंदिर की जमीन वापिस लेने का बीड़ा मियां अलीज़फ़र साहब ने उठाया । मुक़दमा मुन्सिफ़साहब के इजलास में हुआ । पंचों की शहादत से फिर जमीन ठाकुरजी के नाम दर्ज होगयी । पंचों के धन्यवाद के साथ विशेष धन्यवाद–मियां अलीजफ़र साहबको है जिन्होंने मुसल्मानधर्मी होकर इस प्रकार ठाकुर मंदिर के लिये इतना परिश्रम किया । यदि इसी प्रकार सर्वत्र हिन्दू मुसल्मान परस्पर प्रेम के साथ धर्म-कार्य्यों में एक दूसरे के साथ सहानुभूति रक्खें; तो बड़ा उपकार हो । यह मियां साहब सत्य बोलने में नगर में प्रसिद्ध हैं । आपने बहुत से नुक़्सान सहे; परन्तु झूठ नहीं बोला । राम–और रहीम एकही मानकर हिन्दुओं के प्रिय हुए हैं ।

पिता पुत्रकी वार्त्ता ।

शिक्षा (१६) हे पिताजी आपने अपनी अवस्था में धन तो विशेष कमाया परन्तु किसी धर्मरूपी पक्के खजाने में जमा नहीं किया जो आपत्तिकाल में काम आता विषयानन्द में वृथा लुटाया जब मेरा जन्म हुवा आप ने बड़ी प्रसन्नता प्रकट की और प्रेमभाव से पोषण किया । जब मेरे विवाह का समय हुवा धन नहीं रहा अब आपको चिन्ता हुई नगर में किस से सलाह करें हमारा नाम बड़ा है । पिताने अपने मित्रगणों को बुलाके सलाह की मित्रों ने सम्मति दी कि किसी साहूकार से ऋण लेलो निदान यही स्थिर हुवा ज़ायदाद

रक्खीगयी सर्कार में रजिस्ट्री कीगयी मित्रमण्डली को बुलाकर वेश्या बुलाकर महफ़िल रचीगयी बाग-बाड़ी—आतशबाजी—बखेर—हाथी—घोड़े सब तयार हुए। दूल्हा घोड़ी पर चढ़ा बरात चढ़ी सब जलूस उठा बहुत धूम धाम हुई वेश्या के नाच से बाजारों में इतनी भीड़ हुई कि रास्ते बन्द होगये । बागबाड़ी लुटी आतिशबाजी छुटी नगर में वाह २ खुशामदी लोगों ने करी खूब लोगों ने कौतुक देखे शोक है जिन भंगी चमारों के स्पर्श से सचैल स्नान कियाजाता है वह आरते के समय समधी के द्वार पर लगे बखेर लूटने वह नीच लोग सब को छूते हुए घरों में घुस २ कर बखेर लूटनेलगे स्त्रियां भी भंगी आदि नीच पुरुषों से छुईगयीं कहनेलगीं क्या डर है बरात का भोजन तो श्रीजगन्नाथजी का भात है भला जौनार के समय क्या न्हायाजाता है—क्या कपड़े धोवें विवाह के समय छुवा छूत नहीं मानीजाती चलो अब कोठे पर से विवाह के नाच का आनन्द देखें वेश्या कैसे मीठे स्वरों से गाली गारही है ।

लड़का बोला पिताजी मैंने कन्यादान प्रतिग्रह लिया है प्रायश्चित्त के लिये कुछ धन दान करादो पुरोहितजी कहते हैं यह सुन पिताजी चुपचाप उठकर चल दिये—विवाह होगया लड़के ने विनय की हे पिता जितना धन आपने व्यय किया नाच तमाशे आदि में

यदि मेरे हाथ से दान करायाजाता तो उभय लोक साधन होते क्षण भर की मूर्खों की वाह २ में लुटगया इन बातों में नाक नहीं रहती कुछ काल के अनन्तर पिताजी चलबसे अब पुत्र अपनी माता से ऋण बढ़ जाने पर कहता है।

पुत्र माताकी परस्पर वार्त्ता।

शिक्षा(१७) माता मैं अब क्या करूं पिताजी बहुत कर्जा करके चलबसे मेरी अवस्था छोटी है मुझ में कमाने की बुद्धि नहीं है अब साहूकार जादात नीलाम करावेगा कैसे निर्वाह होगा लड़के की यह पश्चात्ताप भरी बातें सुनकर माता बोली बेटा धैर्य्य कर मेरे शरीर के जो आभूषण हैं उतारकर देती हूं इन्हें बेचकर निर्वाह करेंगे मैंने तेरे पिताजी को बहुत समझाया मेरा एक कहना नहीं माना सब कुछ नाच तमाशे में दोस्तों के कहने से व्यय कर दिया शरीर में रोग लगाकर सर्वस्व नष्ट कर दिया।

बेटा कहता है माताजी मुझे पिताजी ने बड़े प्यार से पाला खेद है मुझे विद्या न पढ़ाई बैल बना दिया यदि मैं विद्वान् होता तो सब ऋण चुका देता देख माता मेरा विवाह बहुत थोड़ी अवस्था में कर दिया अब इस कुटुम्बरूपी गाड़ी के खैंचने में मैं असमर्थ हूं अब वह मित्र भी पास नहीं आते जिन्होंने मेरे विवाह में व्यर्थ धन लुटवाया जिसका मुझे शोक है अब कोई धैर्य्य देनेवाला भी नहीं है।

यदि हमारी ज्ञाति में कोई पंच इस कुरीति को बन्द करदेते कि नाच-आतशबाजी-बागवाड़ी-बखेर-आदि विवाहों में न होवे तो हमारी यह दुर्गति काहे को होती और तेरे शरीर के आभूषण काहे को उतरते जो धन व्यर्थ लुटायागया उससे जीवनभर सुख मिलता-और न यह जादाद बिकती और न ऋण होता यह लड़का पंचों के पास जाकर निवेदन करता है हे पंचो ! साहूकार से मेरा छुटकारा करादो यह मेरी माता ने अपने आभूषण उतारके दिये हैं मेरी धर्म-पत्नी (स्त्री) का भी सब ज़ेवर उतरगया सुहागतक का भूषण नहीं रहा हा ! मेरा हृदय बड़ा कठोर है स्त्री का सुहाग मेरे होते सब उतरगया यह न फटा उस समय जब मेरी माता तथा स्त्री ने आभूषण उतारे मैं रोते २ विह्वल होकर मूर्च्छित होगया। अब यह धन-पतराय साहूकार का पुत्र कर्जा देने साह करोड़ीमल के पास गया और कहा हे पिता मेरी माता ने आपको बुलाया है अपना कर्जा लेलो आपका बही खाता मैं लिये चलता हूं हमें अपनी छत्रछाया में बसालो आप हमारे धर्म के पिता हैं मैं अभी बालक हूं। साहूकार बड़े दयालु थे दयावश बालक को छाती से लगाया और सब कर्जा उतरवादिया बिगड़ेहुए घर को संभालदिया।

वर्त्तमान के छोटे साहूकार ऐसी दया नहीं रखते कौड़ी २ सूद दरसूद रखालेते हैं चाहें कोई नष्ट भ्रष्ट होजावे उन्हें कुछ मतलब नहीं।

बालक कहता है मेरा जीवन धिक् है जो मेरे होते मेरी माताजी तथा स्त्री के आभूषण उतरगये। अब वह बराती कहां हैं जो माल खाके वेश्या की तान में महफिल में मुग्ध बैठे हुए पान चवाते थे। आज वह मेरी ही जादाद को खरीदने के लिये तयार है जैसी बागवाड़ी लुटी थी उसी भांति आज हमारा घर लुटरहा है प्रथम बातों में चढ़ाकर हमारे पिता को खोटी सलाह देकर हमारा घर बर्बाद करदिया हे माता मुझे बड़ा पश्चात्ताप होता है क्षणभर की खुशी के लिये व्यर्थ धन लुटायागया जन्मभर का दुख होगया अब कौन हमारी पुकार सुने किसके सामने दुख रोवें। यदि माता अपना शृंगार आभूषण नहीं देती और मेरी धर्मपत्नी के आभूषण न उतरते तो आज रहने का घर कैसे वचता। धन्य है माता तू धन्य है हे पतिव्रता स्त्री तू भी धन्य है जिन्होंने इस समय मेरी लाज रखली।

जिनके घर में धन नहीं स्त्री कलहकर्त्री और व्यभिचारिणी है पुरुष अमीर वने फिरते हैं वह गृहस्थ नरक समान है पिताजी धन्यवाद है दूसरे दोस्तों के वहकाने से आंख मीचके धन खोया और शरीर में रोग खरीदा हमें नष्ट भ्रष्ट करके चलदिये माताजी ने वसा लिये नहीं तो गृहस्थरूपी नाव डूबीगयी थी।

जो पुरुष माता की आज्ञा तथा धर्मपत्नी का अनादर करेगा वह जन्मभर दुख भोगेगा।

एक सेठ की कथा।

वेश्या का आनन्द।

शिक्षा (१८) एक नवयुवा सेठ अपनी प्रिय वेश्या के साथ श्रीहरिद्वार आये और कनखलतीर्थ में तीन मास निवास किया नित्य हारमौनियम बजनेलगा इस गाने बजाने के साथ ही नवयुवाओं की दावतें भी उड़नेलगीं कभी २ यह नवयुवा हवाखोरी को सवारी में निकलतेरहे इनका शरीर श्वेत अस्थिपंजर वेश्या का रंग गुलाबी चमकता हुवा था यह वेश्या नित्य सावन लगा स्नान करतीरही इनके तीर्थपुरोहित ने बड़ी खातिर की और आशीर्वाद दिये परन्तु सेठ जी का रुधिर न बढ़ा। यहां की आवहवा ने भी कुछ असर न दिखाया तब उस वेश्या सहित अपने अस्थि-पंजर सहित देश को चलेगये अन्ततः प्लेग में चलबसे। यदि ऐसे समय धर्मपत्नी होती सेवा करती कुछ अन्नदान आदि उस लोक के लिये पल्ले बांधती साथी तो वेश्यागामी मित्र थे वह क्या परलोक सुधारते परलोक तो सनातनधर्म्म की सेवा से सुधरता है।

खड़ा होकर रुपया विलाप करता है।

शिक्षा (१९) अरे पापी तैंने अधर्म के साथ मुझे संग्रह किया मिथ्याभाषण और आडंबर के साथ मुझे कमाया तैंने ऐसे कोश में नहीं रक्खा जो समय पर तेरे काम आता तैंने मैदान में व्यर्थ मुझे फेंक दिया

अब ठोकरें खारहा हूं सर्दी धूप सताती है अब मैं भागताहूं और तुझे सूचना देता हूं नकारा बजाके अब तू मेरे निरादरता का कौतुक देखले।

अमीरों के बालक बाजारों में चाट खा २ कर रोगी बनते हैं वेश्या के वहां जाकर बीच महफिल के मैं ही तो नाचता हूं और भावी सन्तानों को बिगाड़ता हूं और लोगों के घर को नष्ट भ्रष्ट करता हूं वेश्या के घर बिजुली की हांडी में जलताहूं अलमारियों में अतर फुलैल बनकर विराजता हूं मैं ही बरांडी बनकर उन्मत्त करदेता हूं जिससमय वेश्या हँस २ कर इतर लगाती है प्याला पिलाती है तब उस आनन्द में अशर्फियां झड़ती हैं अशर्फी ने शरीर का रुधिर शोखलिया शरीर में मज्जातक न रही सारा रुधिर खिंचगया बनादिया अस्थिपंजर अब मरने लगे।

मैंही जुवे में मैदान के बीच तमाशा दिखाता हूं कोई हँसता है कोई रोता है जो रोता है वह माल मारता है जहां से मिलसके लाता है जब पुलिस ने पकड़ लिया तो आभूषण अदालत से धारण कराये गये कहो कैसा आनन्द चखाया।

मैंही पिला २ के नशा मद्य-कोकीन-गाझा-चरस-अफीम-खुला चारोंतर्फ को घुमादेता हूं और शीघ्र पीत रंग बनादेता हूं। कहीं चोरों के हाथ पड़ता हूं। कहीं आग में भस्म होता हूं।

मैं धर्म के नाम से डरता हूं वहां सदा के लिये रुक

जाता हूं मेरी चञ्चलता तथा स्वतंत्रता नष्ट होजाती है जो धर्म के नाम से स्थान बनाकर किराये वसूल करते और अपना स्वार्थ पूरा करते हैं और धर्मस्थानों को बेच भी देते हैं अनेकों ने धर्मस्थान बेचडाले मैं पढ़े लिखे वकीलों और धर्मात्माओं से दुखी हूं वह रखते हैं मुझे बड़ी निगरानी से पूर्वोक्त सर्वत्र की सैर मुझे नहीं करनेदेते मानो मुझे पक्के कोश में रखते हैं इस लोक में उन्हें कीर्त्ति मिलती है परलोक में मुझे साथ संग २ आगे २ चलनेपड़ता है।

अधर्मियों के संग मुझे जाना नहीं पड़ता यहीं रहजाता हूं केवल यमपुरी का चौड़ा रास्ता बनाकर उन्हें भेजदेता हूं।

धर्म की आड़ में कोई २ साधू लाते हैं साहूकारों के यहां से। मुझको मनमाना व्यय करते हैं बड़े २ गद्दे तकिये लगाते हुए मेवा–मिष्टान्न–खाते हैं कोठी बंगले बनाते हैं ऐसों के चरणों में पड़ारहता हूं।

स्वर्ग या नरक में पहुँचना मेरेही कारण है सद्व्यय करनेवाले के साथ स्वर्ग जाता हूं अपव्यय करनेवाले को सीधा यमपुर भेजता हूं।

धर्मात्माओं को उचित है धनको कभी अपव्यय (फिजूल खर्च) में बर्बाद न करें।

अनैक्यतादेवी (फूट) का कौतुक।

शिक्षा (२०) फूट घर २ के भीतर कैसा नाच नचारही

है यही फूट भाई भाइयों में मुकद्दमे करादेती है एक गज भूमि के ऊपर सहोदर भाई तक झगड़ते हुए दीखते हैं इस अनैक्यता से बड़ी हानि होरही है सब से प्रीतिपूर्वक वर्तना मनुष्य का धर्म है सनातनधर्म के ग्रंथों में लिखा है।

मित्रस्य चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षामहे ।

अर्थात् सब प्राणियों को मित्रदृष्टि से देखना ।

सर्वे कुशलिनस्सन्तु सर्वे सन्तु निरामयाः ।

सब कुशल से रहें सब आरोग्य रहें यह सनातनधर्म की प्रार्थना सारे संसार को अपना कुटुम्बी जाने ।

एकै घर में दो मते कुशल कहां से होय ?

शिक्षा (२१) एक महाजन के पुत्र का विवाह था दूल्हा के मित्रों ने कहा कि मित्र क्या बरात सूनसान से लेचलेगा नाच विना हमारा चित्त कैसे लगेगा लड़का कहता है कि हमारे घर की यह मर्याद नहीं है कि हम बरात में वेश्या का नाच करावें । मित्रगणोंने उत्तर दिया तो ऐसी बरात में हम नहीं चलेंगे जहां नाच तमाशा कुछ नहीं तब लाचार हो इसने अपने बाबा से विना पूछे मित्रों के कहने से वेश्या को बुलवा लिया जब बाबाजी को समाचार मिला लड़के को समझाया परन्तु कुछ वश न चला अन्ततः कुमित्रों के फुसलाने का यह प्रभाव पड़ा कि बाबाजी बरात में जाने से भी रहगये किसी ने इस वृद्ध की बात भी

न पूछी यद्यपि बड़े वृद्ध पुरुषों की शिक्षा सुनने में कटु होती है परन्तु परिणाम अच्छा है बरात चली गयी वेश्या तथा मित्रमण्डली बराती बने धन्य है यह वेश्यारसिक जो कुलमर्य्याद तथा बड़ों की आज्ञाभंग कर उस कुलटा में भक्ति रखकर धन यौवन का नाशकर रोगी होकर वैद्यों की सेवा करतेहुए अल्पकाल में ही यमधाम को सिधारजाते हैं। प्यारे! विचारो जब शरीर में बल न रहा इस अस्थिपंजर को कौन पूछेगा विना तोते के खाली पिंजरे को कौन राम राम करेगा क्या ऐसा शरीर संसार में कुछ काम देसक्ता है।

ज़रा नेत्र खोलके देखिये धन है तो यह नर है विना धन पजावे का खर है नहीं तो कौड़ी के तीन २ नर है यह उक्ति कितनी ठीक है।

आलस्य से हानि।

शिक्षा (२२) जो मनुष्य ब्रह्ममुहूर्त्त तक सूर्य्योदयकाल में आलस्यवश सोते पड़ेरहते हैं वह बड़ी हानि उठाते हैं।

सदा रात को सोयके जो जागे बड़ि भोर।
सो नीरोग शरीरतें गहत ज्ञान की डोर ॥ १ ॥

महाकवि श्रीकालिदासजीने रघुवंशी लोगों की प्रशंसा में प्रभात उठनेकी बड़ी प्रशंसा उनकी लिखी है।

यथाकालप्रबोधिनाम् (अर्थात् उचितकाल

में उठनेवाले) वर्त्तमानकालमें बहुधा नवयुवक प्रहर दिन चढ़े उठे न ईश्वर का नाम है न भजन है कुल्ला बिना कियेही टिफन और चा का प्याला हाथ में लिया शौच तथा दन्तधावन का तो अभी पता तक नहीं कपड़े पहर कर इधर उधर भ्रमण करने चलदिये न स्नान है न सन्ध्या है सारा समय व्यर्थ खोदिया मध्याह्न में कुछ भोजन कर फिर सोगये अथवा वाद विवाद में कुछ समय लगादिया।

काव्यशास्त्रविनोदेन कालो गच्छति धीमताम्।
व्यसनेन च मूर्खाणां निद्रया कलहेन वा ॥ १ ॥

पूर्वकाल में सनातनधर्मावलम्बी हिन्दूजाति के युवक ब्राह्ममुहूर्त्त में उठकर ईश्वरस्मरण इस प्रकार करते थे।

प्रातः स्मरामि रघुनाथमुखारविन्दम्।

फिर अपने हाथों को देखकर यह मंत्र पढ़ते थे।

कराग्रे वसते लक्ष्मीः करमध्ये सरस्वती।
करपृष्ठे च गोविन्दः प्रभाते करदर्शनम् ॥ १ ॥

फिर दन्तधावन स्नानादि आवश्यक कृत्य से निवृत्त होकर सन्ध्या तर्पण ईश्वरप्रतिमा पूजन कर नित्य चरणामृत लेते थे। तत्पश्चात् सूर्य्यदेव–तथा गौमाता–को नमस्कार करके माता–पिता–गुरु–आचार्य्य को वन्दना कर वृद्ध पुरुषों का आशीर्वाद लेकर तब गृहस्थकार्य्य में लगते थे मध्याह्नसमय में श्रीठाकुरजी

को भोग लगाकर प्रसाद पाते थे सायंकाल को सन्ध्या-वन्दन कर सकुटुम्ब हरिकथा पुराणादि श्रवण करते सत्संग में समय व्यतीत करते थे रात्रि को शयन करती समय ईश्वरनामोच्चारण कर सोते थे जिससे स्वप्न भी धर्म के ही दीखें।

अधर्मी पुरुषों का स्वरूप।

शिक्षा (२३) जिनके मन में दया नहीं विश्वास देकर फिर छल करना अर्थात् विश्वासघाती—कृतघ्न अर्थात् किये हुए को न माननेवाले—अभिमानी—मिथ्याभाषी—दरिद्री पुरुषों को सताकर उनकी हाय लेनेवाले कपटी छली आदि अधर्मी जीवों के पाप सेही अकाल (दुर्भिक्ष) महामारी प्लेग आदि देश में होते हैं इन नारकी जीवों के दर्शन सभी नगरों में हैं, अंधे—लूले—कोढ़ी—जिनके शरीर की दुर्गंध से नाक में कपड़ा लगाकर चलनापड़ता है ऐसों को देखकर जानलेना यह अपने कर्मों का फल भोगनेवाले नरक से आये हुए नारकी जीव हैं।

विपरीत वायु में तीव्रता के साथ दौड़नेवाले पापी जीव।

शिक्षा (२४) माता पिता का अपमान—और कुलमर्य्याद छोड़नेवाले पापी जीव हैं धर्मपत्नी का त्याग—परस्त्री तथा वेश्यागामी पंच बनके प्रपंच करनेवाले—मिथ्या शपथ खाकर न्यायालय में गंगाजली उठानेवाले—

परस्पर झगड़ा कराकर अपना स्वार्थ पूरा करनेवाले-निर्दोषी को दोष लगानेवाले कन्याओं के धन से अपनी थैली भरनेवाले-और बालकों विधवाओं का भाग मारनेवाले-धर्मकार्य्य में विघ्न डालनेवाले-इत्यादि पापी धर्म के विपरीत चलनेवाले अधर्मी हैं।

(२५) थोड़ी अवस्था में लड़के लड़कियों का व्याह होने से ब्रह्मचर्य्य का नाश होरहा है कोई २ वृद्ध पुरुष छोटी लड़की व्याहलाता है वह युवा हुई वृद्ध जी चलबसे यह दशा वर्त्तमान में गृहस्थाश्रम की है अब वानप्रस्थ तथा संन्यास की दशा देखिये जिनका धर्म कन्द मूल फल खाने का था वनों में निवास करते थे वह उड़ाते हैं मालपूवे और बंगलों कोठियों में रहते हैं। जो यज्ञोपवीत के अधिकारी नहीं वह पहरते हैं। कथा आदि धर्मकार्य्य दान में खोटा रुपया आता है वेश्या को खरा करारा दियाजाता है यह दान की दशा है। दान को पूर्वकाल में गुप्त रखते थे अब मैदान में दिखाकर देना प्रतिष्ठा समझते हैं अपने भाई तथा मित्रों को दिखायाजाता है गुप्तदान देना इसका तो प्रायः लोप होगया है।

जो सेवा करे झूठी २ खुशामद करे वही दानपात्र है यह दशा आजकल वर्णाश्रम की होरही है।

शिक्षा (२६) इस संसार में धर्मात्मा सन्तान पार उतारेगी कुपुत्रही कुलको डुबोता है सनातनधर्मही सहायता करता है लिखा है।

धर्म एव हतो हन्ति धर्मो रक्षति रक्षितः ।

धर्मात्मा सुपुत्र के हाथ का दिया हुवा अंजलिदान पहुँचता है धर्म किया हुवा अन्त में पार लगाता है धर्मपत्नी कुलवधू से उत्पन्न सुपुत्र से संसार में भी यश मिलता है उसका दिया हुवा पिंड परलोक में मिलता है वर्णसंकर सन्तान से इस लोक में अपयश मिलता है और न उसके दिये पिंड जलदानादि प्राप्त होते हैं गीताजी में लिखा है ।

संकरो नरकायैव कुलघ्नानां कुलस्य च ।
पतन्ति पितरो ह्येषां लुप्तपिण्डोदकक्रियाः ॥

अपनी विवाहिता स्त्री को त्याग परस्त्री अथवा वेश्या से सन्तान लड़का हो तो पितरों का पिंड लोप होकर उन्हें नरक में भेजता है यदि लड़की हुई तो उभय लोक नष्ट होजाते हैं । इस प्रकार कुकर्मद्वारा सन्तान उत्पन्न करनेवाले सनातनधर्मी समझे जासक्ते हैं ।

स्वर्ग-नरक-प्राप्त करना मनुष्य के हाथ है क्योंकि कर्म करने में जीव स्वतन्त्र है । जो धर्मात्मा दान करते-दीन दुखियों पर दया करते धर्म का उपदेश देते तथा दिलाते हैं सदावर्त्त लगाते नित्य भगवान् को भोग लगाकर प्रसाद पाते ऐसे पुरुष स्वर्ग के लिये अपना रास्ता बनाते हैं और जो स्वार्थपरायण है और ईश्वरभजन नहीं करते अच्छे २ पदार्थ केवल अपने

ही पेटमें उतारते हैं अपने पुरुषाओं की एकत्रित की-
हुई अथवा अपनी कमाई हुई सम्पत्ति को आंख बन्द
कर कुमार्ग में व्यय करते हैं परोपकारी कामों में कौड़ी
नहीं देते ऐसे मनुष्य नरक का मार्ग यमपुर जाने को
अपने लिये तैयार करते हैं ।

लोभ की पराकाष्ठा ।

कनखल के साधू की सत्य घटना ।

शिक्षा (२७) हमारे कनखलतीर्थ में एक साधू निवास किया
करता था इसके पास कुछ अशर्फी जमा होगयीं एक
मनुष्य इसकी सेवा करने सदा इसके पास रहता था ।
जब यह रोगी हुवा और आसन्नमरण हुवा इसने वि-
चारा कि अशर्फी यह आदमी लेलेगा हलुवा बनाकर
प्रत्येक ग्रास के साथ एक २ करके सब को निगलगया
कि इस धन को साथ लेचलूं अर्थात् मेरे पीछे कोई
और इन अशर्फियों को न लेवे । जब देह छुटगया
वह सेवा करनेवाला अशर्फियों को ढूंढ़नेलगा अशर्फी
हाथ न आईं विचारनेलगा यहां अन्य पुरुष कोई भी
नहीं आया अशर्फी कहां उड़गयीं जब देह लेजाकर
गंगातट में भस्म कीगयी सुवर्ण का डेला कुछ समय
के पश्चात् भस्म में चमका उसे बेचकर इस सेवक ने
साधू के नाम का भंडारा किया जब पंक्ति भोजन को
बैठी भोजन में छोटे २ क्रिमि (कीड़े) दीखनेलगे सब
विचार करने लगे इस ताजे पक्कान्न में कीड़े कहांसे आये

अन्त में बुद्धिमानों नें यह विचार स्थिर किया यह धन को ईश्वर के अर्पण करके दान करता तो यह अमृतरूप होता। इसने जमा किया पेटरूपी नरक में तो क्यों न कीड़े पड़ें। साधु लोगों को धातुस्पर्श तक का दोष जब शास्त्र में लिखा है क्योंकि इस प्रपंच से साधु लोगों के भजन में बाधा पड़ती है इसने धन संग्रह किया मूर्खतावश साथ लेचलने का यह उपाय किया कि निगल गया यह न विचारा दान सेही धन साथ जाता है न कि पेट में धरलेने से। शरीर तो यहां रहजाता है। जो मनुष्य परमात्माओं को नहीं जानता पेट भरने के सिवाय कुछ नहीं जानता केवल धन जोड़ने में लगा हुवा है कभी देवदर्शन तथा तीर्थयात्रा नहीं की और न कथा धर्मचर्चा सुनी क्या ऐसे पेट पालनेवाले यमपुरी को नहीं जायँगे अवश्य जावेंगे।

स्वार्थ ने तथा संसारके भोग विलास ने उस परमात्मा के दर्बार में पहुँचने का मार्ग भुलादिया।

शिक्षा (२८) गृहस्थाश्रम की जड़ पोली होतीजाती है सावधान होजावो अपनी २ सन्तानों को शिक्षित करने में विलम्ब न करो।

यदि कच्चे फलों को तोड़कर बीज के लिये रक्खो वृक्ष नहीं लगेंगे। इसीप्रकार खेत से कच्ची बालें अन्न की तोड़कर कोठों में भरीजावें और चाहें कैसेही उत्तम खेत में बोईजावें कदापि नहीं उगेंगी।

इसीप्रकार ब्रह्मचर्य्य विना वंश की दशा समझना छोटी अवस्था का पुत्र पुत्रियोंका विवाह करना भी इसी भांति है। अपनी सन्तान को ब्रह्मचर्य्य धारण न कराना तथा विद्या न पढ़ाना मानो अपने सन्तान को बैल बनाना है अब इन बैलों से आगे को उत्तम खेती चाहते हैं और आगे बढ़ाने को माररहे हैं यह कभी पूरी मंजिल पर नहीं पहुँचा सके। यदि नकेल निकालकर जंगल में छोड़ दिये जाते अपनी उमर में काम देते तो जन्म भर का आराम मिलता हमने तो निर्दयता से छोटी अवस्था में जोत दिये अब जल्दी कैसे चलें शरीर में जोश तो हैही नहीं अर्थात् ब्रह्मचर्य्यरूपी रत्न लुटगया प्रभाहीन—बलहीन सन्तान आगे बढ़कर उन्नति कैसे करे अब विद्यारूपी चारा खुला २ कर इन बैलों को पुष्ट करो यही पिता का कर्त्तव्य है तब गृहस्थीरूपी गाड़ी शीघ्र चलेगी चार दिन का मार्ग एक दिन में पूरा करेगी ब्रह्मचर्य्य तथा विद्यारूपी चारे विना खुलाये आर लगा २ कर इस संसाररूपी जंगल में इन सन्तानरूपी बैलों को हांकना चाहता है। यह नहीं आगे बढ़ेंगे तुम जंगल में खड़े २ लुटजावोगे क्या लाभ होगा।

शिक्षा (२६) संसार में जितना अनुचित कार्य्य और पाप बढ़ताहै उसी तरह आयु—बल—क्षीण होकर रोगी बन अल्पायु होनेवाले निर्जीव शरीर—उत्पन्न होनेलगते हैं इसीसे गृहस्थाश्रम की जड़ पोली होरही है।

गृहस्थाश्रम कामधेनु गौ के समान है।

शिक्षा (३०) इस संसारसागर में गृहस्थाश्रम सब से बड़ा आश्रम है जैसे सब नदियां समुद्र में जाती हैं उसी प्रकार सारे आश्रम गृहस्थी के द्वार में पहुँचते हैं यही शास्त्र में लिखा है।

यथा नदीनदाः सर्वे सागरं यान्ति संस्थितम् ।

इस गृहस्थी के द्वारपरही सब वर्णाश्रम का मान होता है न मालूम परमात्मा किसी वेष में आकर गृहस्थी के घर को पवित्र करजाते हैं अतिथिसत्कार गृहस्थ का मुख्य धर्म है।

उत्तमस्यापि वर्णस्य नीचोपि गृहमागतः ।
सर्वदेवमयो मान्यः सर्वदेवमयोऽतिथिः ॥

अतिथि को देवता के समान मानना शास्त्रों में लिखा है अतिथि को निराश न करे निराश हुवा अतिथि अपना पाप गृहस्थी को देकर सञ्चित पुण्य लेकर चलाजाता है।

अतिथिर्यस्य भग्नाशो गृहात्प्रतिनिवर्त्तते ।
स तस्मै दुष्करं दत्त्वा पुण्यमादाय गच्छति ॥

जिस गृहस्थ के द्वारपर अतिथि-राजा-आचार्य्य आदि मान्यों का पूजन सत्कार नहीं है क्या ऐसे गृहस्थ सनातनधर्मी होसक्ते हैं कदापि नहीं गृहस्थ को ही संग्रह करना इसीलिये लिखा है वह समय २

पर अतिथिसत्कार करे जब संग्रह न होगा तो उस समय मुँह फैलाकर देखता रहजायगा—हां साधुजनों को संग्रह करना मना है अब उलटा व्यवहार होरहा है अर्थात् साधू तो संग्रह करते हैं गृहस्थी लुटारहे हैं साधू लोग एक सेर में जो आधा बचारखते हैं उसी बचे हुए की बदौलत कोठी बंगले हाथी घोड़े बंधे हैं। गृहस्थी को अनेकानेक विवाहादि संस्कार बहुत व्यय लगे हुए हैं इसलिये गृहस्थी को विचारकर चलना चाहिये जब व्यय का समय आवे तो किसी साहूकार से ऋण न लेनापड़े गृहस्थ कुवेर भंडार है वृक्षों के पत्ते तक इसके काम की चीज़ हैं गृहस्थियों के द्वारा ही अनेक पवलिक काम होरहे हैं जिस घरमें धर्मपत्नी पतिव्रता है सबसे मीठा बोलती है घर से बाहर नहीं निकलती सास श्वशुरों गुरुजनों की आज्ञा में रहती है वही स्त्री अपने दोनों कुलों को पवित्र करती है।

वर्त्तमान में ऐसी कलहकर्त्ता स्त्रियां बहुत दीखती हैं जो बीच बाजारों में चौराहों पर झगड़तीरहती हैं और गृहस्वामी (पति) को कुछ नहीं समझतीं घर में तो मलिन रहती हैं बाहर जाने को शृंगार होता है मानो शृंगार दूसरों के दिखाने के लिये है। शोक है कलहकर्त्ता नारी तथा पुरुषों पर।

सन्तुष्टो भार्यया भर्त्ता भर्त्रा भार्या तथैव च।
तस्मिन्नेव कुले नित्यं कल्याणं चैव वै ध्रुवम्॥१॥

शिक्षा (३१) (परमात्मा कहां है वह क्या कर्त्ता है) परमात्मा जड़ चेतन सर्वत्र व्यापक है।

अग्निर्यथैको भुवनं प्रविष्टो रूपं रूपं प्रतिरूपो बभूव एकस्तथा सर्वभूतान्तरात्मा॥

वह अग्नि के समान सब में रमरहा है देवस्थानों में तथा तीर्थों में उसकी विशेष कला है राजा में उस का अंश है इसीलिये गीताजीमें कहा है।

नराणांच नराधिपः।

पांच पंचों की सम्मति में वह स्वयं बैठा है।

वह अहंकार को खाता है और जीवों के अच्छे-बुरे-कर्मों का फल भुगवाता है और साक्षी है। अपने अनन्य भक्तों में उसका निवास है जहां भजन-पूजन-सनातन धर्मचर्चा होती है वहां निवास है वहां अधर्म का प्रवेश नहीं होता।

पुण्यात्माओं को सुख।

शिक्षा (३२) पुण्यात्मा जीव इस संसारमें भी स्वर्ग का अनुभव करते हैं भोग्य सामग्री अपने शुभ कर्मों से साथ लाये हैं भोजन सामग्री-सेवक-अन्न-धन-सन्तान-सवारी आदि सब प्रस्तुत हैं लोक में प्रतिष्ठा है यही स्वर्ग है इन सुखों में उन्मत्त होकर अगले पड़ाव की यात्रा को भूलना नहीं चाहिये जहां अचानक यात्रा करनी होगी। वहां भी सवारी-नौकर-अन्न धन विना बहुत क्लेश होगा यह ठाठ सब यहांही रह जावेगा

तेरा धर्म और पाप यहीं साथ जायगा तुझे अधिकार है जाने से पहले चलते हाथ पैरों के साथ लेचलने को गठरी बांधले नहीं तो सब यहीं लुट जावेगा । फिर ऐसा समय हाथ न आवेगा ।

शरीरमें ही चारों युगों का वर्णन ।

शिक्षा (३३) जब तक यह छोटा बालक माता की गोद में है दूध पीताहै काम–क्रोध–लोभ–मोह–नहींहै पाप पुण्य का ज्ञान नहीं है। किसी से राग–द्वेष कुछ नहीं हँस २ के बड़े प्रेम से उछल कर गोद में पड़ा हुआ हाथ नचाता है यही सत्ययुग की अवस्था हैं सत्ययुग में पाप रहित ईश्वर का स्वरूप ऐसेही पुरुष होते थे उन पुरुषों का नमूना घर में छोटे बालकों में देखो दूसरी अवस्था त्रेता है । इस युग में मर्य्यादारक्षक भगवान् रामचन्द्र महाराज ने अवतार लिया । यह बालक अब अपने पिताकी गोद में आया ब्रह्मचर्य्य को धारण कर मर्य्यादा सीखने गुरुगृह में निवास करने लगा यह इस शरीर की त्रेतावस्था है ।

शरीर की तीसरी अवस्था का नाम द्वापर है जिसमें श्रीभगवान् कृष्णचन्द्र का अवतार हुआ था जिन्होंने प्रेममयी लीला करीं । अब इसका विवाह होगया गृहस्थी बना धर्म से आजीविका करके संग्रह करना वंश को बढ़ाना सन्तान को उत्तम शिक्षा देनी दान–परोपकार–में धन लगाना यह गृहस्थ के कर्त्तव्य हैं ।

अब आई चौथी अवस्था इसीका नाम कलियुग है

अब धन चाहिये पुत्र आज्ञाकारी हो तभी सुख है इस अवस्था में हाथ पैर नहीं चलते नेत्रों की ज्योति मन्द होजाती है दांत नहीं रहते शरीर कांपने लगता है पराधीन होजाता है लाठी के सहारे उठता बैठता है ऐसे कठिन समय में क्या काम आता है धर्म दूसरे पतिव्रता स्त्री–आज्ञाकारी पुत्र–चौथे धन नहीं तो इनके विना बड़ी दुर्दशा भोगकर यह शरीर छूटता है जिसने अपनी चलती में परमात्मा को नहीं भजा दान तथा धर्म नहीं किया अब क्या होसक्ता है।

प्रथमे नार्जिता विद्या द्वितीये नार्जितं धनम्।
तृतीये नार्जितो धर्मश्चतुर्थे किं करिष्यति ॥१॥

पहली अवस्था में विद्या न पढ़ी दूसरी में धन संग्रह न किया तीसरी अवस्था में धर्म न किया तो वह फिर चतुर्थ अवस्था में क्या करसक्ता है?

प्राचीन लीकपर चलनेवाले।

(३४) गरीब ग्रामों के रहनेवाले कृषक नगर में रहने वालों की अपेक्षा अधिक आरोग्य रहते हैं उनके वहां बाज़ार तो है ही नहीं जो चटपटी मसालेदार चीजें मिलें। अभक्ष्य पदार्थ खाने को प्रायः प्राप्त नहीं होते अपने ज़मींदार की आज्ञा में रहते हैं गरम रोटी शाक जो मिलगयी समय पर खाकर परिश्रम तथा उद्योग में रहते हैं स्वच्छ वायु को सेवन करते हैं। न उन्हें वैद्य के वहां जाना पड़ता है और न (मेडिकल हाल)

औषधियों की दुकान में उन्हें जाना पड़ता है यदि भूल से बीमारी ग्रामों में चली भी आती है तो खेतों में टकराकर भागजाती है न पलंग तकिये मिलते हैं और न अनार अंगूर हैं रोग भी अपना अनादर देख कर शीघ्र भागजाता है।

रोग कहता है मुझे आराम अमीरों से मिलता है मैं उनके पास अधिक निवास करता हूं वह मेरे बुलाने की सामग्री पास रखते हैं।

कृषक लोग किस परिश्रम से खेतों में बीज बोते काटते हैं और उनके परिश्रम का अन्न देश देशान्तर के मनुष्यों के आहार में काम आता है।

सनातन धर्म की जय।

शिक्षा (३५) सनातनधर्मियों के लिये तीर्थ पुरोहितों ने काशीपुर निवासी श्री पंडित दुर्गादत्तजी पन्त व्याख्यानभास्कर महोपदेशक के उपदेश से हरिद्वार में ब्रह्मचारी आश्रम ऋषिकुल स्थापन करदिया इसमें विद्यारूपी अमृत छात्रों को पिलाया जाता है सनातन धर्म का एकमात्र दीपक यह भारत में चमका है बालक अवगुणों से बचकर ब्रह्मचर्य्य व्रत पालरहे हैं। सनातनधर्म्मियों को उचित है इस आश्रम की तरफ ध्यान दें और इसकी जड़ को दृढ़ करें इससे भारत का उपकार होगा इसमें जो त्रुटि समझें उन्हें निकाल दें जिससे इसकी दिन प्रतिदिन उन्नति हो यह सारे

भारतवासी सनातनधर्मियों की सम्पत्ति है। यदि ध्यान न दिया जायगा तो हानि का भय है। जिससे सनातनधर्म्म की भारी दुर्दशा होगी प्रत्येक स्थानपर सनातनधर्म्मियों की हँसी होगी। मुख्य कर्मचारी को उचित है इसके व्यय पर विशेष ध्यानदे और आमदनी बढ़ाने का हर समय यत्न करता रहे वर्ष में एक या दो वार डेपुटेशन जाना आवश्यक है जो दो वर्ष से कहीं नहीं गया। जैसा कि पहले जाता था उसी अनुसार जाया करे जिससे कोष में धन बढ़े और उसके व्याज से सब व्यय चलता रहे।

यही कर्त्तव्य पदाधिकारी लोगों का है जो आश्रम को सुदृढ़ करदें और अपना कार्य्य छोड़कर समय दान दें। जबतक निज कामों को छोड़कर इसके पदाधिकारी अपना समय न देंगे तब तक उन्नति होना कठिन है सुनाजाता है आजकल आय बहुत कम है और व्यय बढ़रहा है। वेतन वाले केवल अपनी तरक्की को निवेदन करते हैं काम की ईश्वर जाने उधर ध्यान नहीं देते काम देखकर तरक्की अवश्य होती है छुट्टी लेने वाले शीघ्र छुट्टियां मांगते हैं चाहें पढ़ायी में हर्जा हो इसका दृढ़ नियम सर्कारी कालिजों के अनुसार हो और अधिक छुट्टियां नहीं दीजावें।

खेद है सनातनधर्मियों के समान दान अन्यत्र कहीं नहीं है। यह दानरूपी वर्षा ऊषर भूमि में बहुधा होरही है जहां बीज नहीं उगता। शोक है ऋषिकुल

धन चाहता है क्योंकि इसकी पूर्त्ति को अधिक धन की आवश्यकता है सभापति विचारे दूर रहते हैं तो भी कभी २ फेरा लगाते हैं । सनातनधर्मियों को उचित है इस बने बनाये ऋषिकुल रूपी वृक्ष को विशेष रूप से सींच २ के अपने २ नगर से बालकों के भिजवाने का उद्योग करें जितना वृक्ष बढ़ेगा उतनाही उसकी छाया बढ़ेगी जिसके नीचे छात्रगण विद्याध्ययन करेंगे अब धन कम होने से लड़के बहुत कम लिये जाते हैं उन लड़कों को बड़ा खेद होता है जो खर्च करके दूर २ से आते हैं और धन की कमी से प्रवेशित नहीं होते और लौटाये जाते हैं। यहां फीस नहीं लीजाती केवल दाताओं के दान से ही इनकी रक्षा होती है। जितना दान बढ़ता है उतनेही लड़के बढ़ाते जाते हैं। खेद आश्रमवालों को भी होता है धनकी कमी से उनको मना करना पड़ता है। क्या करें धर्मात्माओं को उचित है इस ऋषिकुल की शाखायें अपने २ नगर में खोलकर नगर तथा देश को लाभ पहुँचावें।

यही है धर्म्म धनपात्रोंका धन साथ जाता नहीं एक धर्मही आगे २ साथ चलता है विद्यादान सर्वोत्तम है।

सर्वेषामेव दानानां ब्रह्मदानं विशिष्यते ॥

मनुः

जिससे गृहस्थाश्रम की उन्नति तथा भारत का

उद्धार है राजा की शुभचिन्तकता प्रजा का सुख इस प्राचीन विद्या की उन्नति से होगा।

तीर्थपुरोहित हरिद्वार वालों ने पं० दुर्गादत्त पन्त जी के उपदेश से खड़ा करके सौंपदिया है उन सनातन धर्मियों को जो विद्यानुरागी हैं और विशेष भार सभापतिजी के ऊपर डालकर यह लोग तो निश्चिन्त होगये। अब आराम करने का समय नहीं है ऋषिकुल के भीतर बैठकर इसके प्रबंध को देखो। जांच करो क्या प्रबंध और होने चाहिये। विना जांच किये खाली फेरा मारकर गाड़ी में बैठकर चलदिये और न स्टाक देखा और न बही से मीलान किया और न भंडार देखा लेक्चर और बाहरी सामान देख चलपड़े।

पुराने समय में जो हिसाब खातेवार सुधारकर बड़े दिनरात परिश्रम से तयार कियागया जिसकी प्रशंसा बड़े २ अमीर कोठीवालों ने की उस हिसाब की बहियों को क्या विचारकर कमेटी ने दाब रक्खीं उसीके अनुसार आगे को खाते न चले इस हिसाब का प्रकाश चमकता हुआ पबलिक ने बहुत पसन्द किया एक साल का अङ्क एक मिनट में देखाजासक्ता है ७०) मासिक सेक्रेटरी को मिलते हैं वह वैतनिक सिफारिशी सेक्रेटरी हैं उनके कामकी जांच कभी किसी ने न की। सुना है वह अपनी परीक्षा के परिश्रम में लगे रहते हैं। परमात्मा उन्हें उत्तीर्ण करे अव ऐसा उपाय निकालना उचित है जो गंगास्नान करनेवाले

यात्रियों को इतनी श्रद्धा होजावे कि विना ऋषिकुल का सत्कार तथा दर्शन किये कदापि विमुख न जावें उनका प्रेम इस ओर आकर्षित करना उचित है जो अपने २ घरों में दान पुण्य करें उस काल में भी अपने इस ऋषिकुल को स्मरण करलें। ऐसा विज्ञापन छपावो कि सब आकर्षित होजावें वह विज्ञापन यात्रियों में वितरण हो।

ऋषिकुल भारतवासियों का पुत्र है सबको सुख पहुँचावेगा इसका शुभचिन्तक और भक्त वही है जो निस्वार्थ नामतक न चाहनेवाला तन-मन-धन-इसकी रक्षा में लगावे और त्यागी भी हो और इसके व्यर्थ व्यय को रोके और न किसी का लिहाजकरै जैसा कि ७०) मासिक देकर कियागया मनमानी छुट्टियां लेतेरहते हैं धन बढ़ाने या उन्नति का कोई भी उपाय न किया खाली काग़ज़ी नाव चलाते रहे यह क़बतक चलेगी!

धन्यवाद है श्रीमान् लाला बल्देवसिंह साहब रईस देहरादून का जो प्रतिमास आश्रम को सहायता देते हैं और प्रति सप्ताह हरिद्वार आते हैं एकहजार रुपये प्रारंभ में आपहीने डुनेशन दिया था आनन्द है कि आपने उपसभापति के पद को स्वीकार किया यदि ऐसीही पदाधिकारी तथा सब ट्रष्टी होजावें तो ऋषि-कुल का कोष भरजावे। इन महोदयने कभी अपना नाम तक नहीं चाहा ऐसेही निस्वार्थ भक्तों के पदाधि-

कारियों से यह आश्रम उन्नति करसक्ता है दूसरा धन्यवाद लाला साहब का यह दियाजाता है आपने पण्डाकुमार सभा ज्वालापुर में स्थापन कराकर एक पण्डाकुमार कर्मकाण्ड वेद विद्यालय मिती वैशाख शुदी १० शुक्रवार ता० २६ अप्रेल सन् १२ को श्रीगंगा बड़ी नहर के किनारे उदयेश्वर वाटिका में स्थापन करादिया जहां एक बड़ी यज्ञशाला बनी है जहां हरिद्वार के पण्डाकुमार कर्मकाण्ड विद्या पढ़ने लगे हैं अब कुछही काल में वह समय आता है कि हरिद्वार तीर्थ में पण्डाकुमार अच्छा कर्मकाण्ड कराने लगेंगे इसमें एक उपदेशक क्लास भी रक्खा गयाहै जिसमें यह पण्डाकुमार उपदेशक–महोपदेशक बनकर भारत में अपने उपदेश द्वारा धर्म रक्षा करेंगे। श्री पं० दुर्गादत्त पन्त महोपदेशकजी के इस उद्योग को परमात्मा सुफल करे।

लाला साहब को तीसरा धन्यवाद इस बात का दिया जाता है श्रीवृन्दावन में जाकर ५५१) रुपये दान देकर ब्रजमण्डल ऋषिकुल वहां स्थापन कराया।

गृहस्थको आनन्द।

शिक्षा (३६) वह गृहस्थी यथार्थ आनन्द भोगताहै जिसका सुपुत्र आज्ञाकारी सुशिक्षित गुणों का भण्डार द्रव्योपार्जन करनेवाला हो और व्यर्थ व्यय न करके धर्म कार्य्यों में मन खोलकर दान देता है और समय पर कभी न चूके।

विना द्रव्य के इस जगत् में कहीं भी इस गृहस्थ का आदर नहीं अपनी अर्द्धांगिनी तक अपनी नहीं होती इसलिये आनन्द चाहनेवाले गृहस्थी को धन संचय करना उचित है ।

गुणवान् पूर्वोक्त लक्षणों वाले सुपुत्र के साथ धन-हीरा-पन्ना रत्न सब पीछे २ चलते हैं ।

ऐसी सन्तान धन्यवाद के योग्य है जो अपने पुरुषाओं की चलायी हुई रीति पर चलते हैं ।

वह भी धन्यहैं जिन दानी धर्मात्माओं के स्थान इस भारत भूमि में ठोर २ बने हुए हैं जिनसे पवलिक को लाभ होकर धर्मोन्नति भी साथ २ होरहीहै उनके व्यय के लिये पूरा २ प्रबंध करदिया गया है जिससे वह स्थिर रहें और उस आमदनी को अपने काम में नहीं लाते और दिन प्रति दिन उनकी उन्नति पहुँचा रहे हैं सनातन-धर्मियों को यही उचित है ।

शोक है धर्मसम्बन्धी स्थान कहीं २ पापी लोगों के हाथ से बिकने भी लगे हैं इनका प्रबंध होना उचित है ।

जिन २ धर्मस्थानों में धर्मात्मा पवलिक का धन दान से या चन्दे से या भेट से लगाया गया है ऐसे धर्मादि स्थानों की जांच होनी उचित है और उनका प्रतिवर्ष हिसाब छपकर पवलिक के सामने प्रकाशित होना आवश्यक है जो पवलिक का धन लगता है उसके प्रकाशित न होने से उसकार्य्य की मूल कटती है ।

विद्वान् उपदेष्टाओं से प्रार्थना।

शिक्षा (३७) आजकल धर्म के विषय में जो विपरीत वायु चलरही है जिससे सनातनधर्म पर विश्वास और श्रद्धा कमती होती जाती है। कुमार्ग की तरफ मनुष्यों की प्रवृत्ति बढ़रही है॥

स्थान २ पर सनातन धर्म के प्रचार के लिये अमृत-वाणी भरे उपदेश नगर २ तथा ग्राम २ में होने उचित हैं जिससे राजा प्रजा दोनों को सुख बढ़े और धर्मरक्षा होवे जबतक भारत के विद्वान् लोग इस ओर अपना ध्यान न देवेंगे तो भावी सन्तान सनातन-धर्मी नहीं रहेंगी जिस तरह से साधू लोग चेला बनाकर भिक्षार्थ उसे भेजकर उसकी कृपा से आनन्द प्राप्त करते हैं इसी भांति ब्राह्मण विद्वान् अपने शिष्यों द्वारा सनातनधर्म का प्रचार करें।

श्री राजराजेश्वर सम्राट् पंचम जार्ज का धन्यवाद।

शिक्षा (३८) हम सब भारतवासी अपने राजराजेश्वर को अपना पिता जानकर उनकी जय मनाते हुए धन्यवाद देते हैं जिन्होंने भारत में पधारकर अपने प्रिय पुत्रों को दर्शन दिये। हमारे धर्म की रक्षा इस राज्य में बहुत अच्छीतरह से होती है। धर्मात्माओं ने अपने २ धर्म सम्बन्धी स्थान स्थापन किये हैं जिन में आजीविका के लिये सम्पत्ति लगा रक्खी है हम

सनातन-धर्मियों का कर्त्तव्य है उनकी रक्षा करते हुए उनका निरीक्षण करते रहें उनको ट्रष्टियों के हाथ में दें धर्मशाला-मंदिर-पवलिक धर्म-स्थान विकने न पावें जिन स्थानों में तीर्थ यात्रीगण आराम से ठहरते हैं वह जो स्थान मंदिरों के हैं पवलिक के धन से वने हैं उनका किराया यात्रियों से कोई न लेवे इस आनन्द-मय शुभराज्य में इस प्रकार सब सम्प्रदाय अपने धर्म की रक्षा उन्नति करते रहें। सब अपना २ धर्म पालन करें कोई किसी से विरोध न रक्खें।

इस वर्त्तमान समय में लाखों आदमी जिन तीर्थों में पहले जाना अत्यन्त कठिन था इस राज्य में रेल के द्वारा वड़े सुख से तीर्थों का दर्शन करते हुए अपना जीवन सफल कर रहे हैं लाखों मनुष्य देश देशान्तरों में जा २ कर निर्भय होकर व्यापार करके लाभ उठा रहे हैं यह सब इस राज्य का प्रताप है। हम सब भारत-वासी प्रजा कोटानि कोटि धन्यवाद अपने सम्राद् भारतेश्वर पंचमजार्ज महोदय का देते हुए ईश्वर से प्रार्थना करते हैं जिनकी कृपा से हम वड़े आनन्द में हैं। वह चिरायु हों हम सदा आपकी छत्र छाया के नीचे रहकर अपने धर्म की उन्नति करते रहें।

हमारे इस पुस्तक के नियम पालनेवाले सेठ जी का ताजा उदाहरण।

१ (३६) फागुन सं० १९६८ सेखावाटी मारवाड़ रामगढ़

निवासी पोतदार भगोतीरामजी की धर्म की ध्वजा सेठ घनश्यामदास जी के पुत्र राधाकिशन केसारदेवजीने अपने चिरंजीव पुत्र के विवाह में वेश्या का नाच-आतशबाजी-बखेर-बागवाड़ी आदि व्यर्थ व्यय बंद करदिये स्त्रियों के सीटने भी रोक दिये। अपनी बिरादरी को यह नमूना दिखा दिया सेखावाटी वैश्यों में यह घर शिरोमणि पंच घर माना जाता है। सेठजी का यह कार्य्य धन्यवाद योग्य है यह घर बहुत प्राचीन समय से प्रतिष्ठित हैं सब मारवाड़ी वंश इनको जानता है कलकत्ता-बम्बई-आदि सभी दिसावरों में इनकी हुंडी चलती हैं बीच जंगल के इनकी हुंडी बिकती है बहुत दान प्रतिवर्ष इस घर से होता है जब ऐसे बड़े आदमियों को विवाहादि में नाच आदि व्यर्थ व्ययों से घृणा हुई तो अब थोड़े पूंजीवाले छोटे आदमियों को भी इस व्यर्थ व्यय को छोड़देना उचित है शोक उन मनुष्यों पर है जो ऋण लेकर अपनी नाक रखने को व्यर्थ व्यय करते हैं जब मांग पड़ेगी और सम्पत्ति नीलाम होगी तो क्या नाक रहजायगी। जिनके घर में लक्ष्मी परिपूर्ण है वह तो व्यर्थ व्यय रोकें। ओछी पूंजी वाले मुलम्मे की चैन घड़ी-छड़ी लगा बाबू बनते हैं बाज़ार में पैसा तक मिलना कठिन है। ऐसों ही को व्यर्थ व्यय अधिक सूझते हैं विद्वान् तथा लक्ष्मीपात्र दोही राजद्वार में तथा सब जगह प्रतिष्ठा

पाते हैं इन्हीं को उच्च आसन प्राप्त है इसलिये इन दोनों को प्राप्त करना उचित है।

शिक्षा (४०) धनपात्र उदार दानी धर्मात्मा अवसर पर नहीं चूकते कुछ नाम दिखाये जाते हैं।

स्वर्गवासी रायबहादुर सेठ सूर्य्यमल—कलकत्ता अब इनके पुत्र रायबहादुर सेठ शिवप्रसादजी गंगासहाय जी हैं इन धर्मात्माओं के धन दान से लाखों मनुष्यों को सुख पहुँचरहा है। इनकीही कमायी सफल है जो परमात्मा के निमित्त पबलिक लाभ के कार्य्य में लगरही है ईश्वर इनके धन सन्तान की वृद्धि करे।

पीलीभीत निवासी श्रीमान् राजा सेठ ललिताप्रसाद बहादुर सेठ हरिप्रसाद महोदयभी धन्यवाद के पात्र हैं जिन्होंने विद्याप्रचार—तथा अन्य बहुत से पबलिक लाभ के कामों में लाखों का धन दान देकर संसार में यश पाकर अपनी लक्ष्मी को सफल किया यह भी अग्रवाल वैश्य कुल भूषण पूर्व उसी देश के हैं।

शिक्षा (४१) जो मनुष्य लक्ष्मी का आदर नहीं करता अपनी प्रतिष्ठा नहीं बढ़ाता गुणी पुरुषों का सत्संग नहीं करता कुसंग में पड़ता है तथा निरुद्यम है उसकी आत्मा नीचे गिरती जाती है।

महात्माओं की इस प्रकार की स्वाभाविक प्रकृति होती है।

विपदि धैर्य्यमथाभ्युदये क्षमा

सदसि वाक्पटुता युधि विक्रमः।
यशसि चाभिरुचिर्व्यसनं श्रुतौ
प्रकृति सिद्धमिदं हि महात्मनाम् ॥ १ ॥

भारत के पूज्य तीर्थ पुरोहितों से प्रार्थना।

शिक्षा (४२) समस्त तीर्थ पुरोहितों के मुख्य महात्माओंसे यह निवेदन है कि सारे भारतवासी सनातन धर्मावलम्बी अपना गुरू मानकर तीर्थों में आकर आप लोगों की चरणरज लेकर अपने को धन्य २ मानते हैं आप लोग उन ऋषि-मुनियों के ऋषि कुमार हैं जिन्होंने तीर्थों में निवास करके बड़े २ तप किये और सारे संसार का उपकार किया और यजमानों को कर्मकाण्ड कराकर उन्हे उत्तम २ उपदेश देकर वर्णाश्रम धर्म की शिक्षा दी। और उनके दान से आये हुए धन से कुटुम्ब पालन तथा बड़े २ उपकारी कार्य्य किये जिससे दाताओं का दान सफल होकर उनको अक्षय पुण्य प्राप्त हुआ हाल में जैसा कि पं० दीनदयालुजी स्वर्गवासी श्योजीराम मौजीराम वंश भूषण कनखल तीर्थ पुरोहितने तीर्थयात्री लोगों के निवास और सुख के लिये मारवाड़ी यजमानों से धर्म स्थान बनवा दिये स्वयंभी मंदिर धर्मशाला बगीचा धर्मार्थ बना-गये। यही तीर्थ पुरोहितों का कर्त्तव्य है और इन्हीं श्योजीराम मौजीराम तीर्थ पुरोहित के वंश में यह परिपाटी और प्रतिज्ञा हुई है कि चार बातें

वेश्या का नृत्य—आतशबाजी—बागवाड़ी—अखेर-विवाहादि अवसरों में न कीजावें। वैशाख शुदी ४ रविवार सं० १९६९ में स्वर्गवासी महात्मा मंगलदत्त विद्वान् कर्मकाण्डी के चिरञ्जीव चन्द्रदत्त जो शान्त स्वभाव होनहार १० वर्ष का बालक है संस्कार होचुका है सन्ध्यावन्दन अग्निहोत्र नित्य करता है जिसको पिताने पूर्व से अच्छी शिक्षा दी है—उसी प्रणाली पर चलता हुआ विद्या में प्रेम रखता है उसके कनिष्ठ भ्राता कृष्णचन्द्र का विवाह मुहूर्त पूर्वोक्त तिथियों में था इन बालकों की माता को मैंने पहलेसेही सूचना दे दी—और दुल्हा के श्वसुर से भी कहदिया कि यह उपरोक्त चारबात हम लोगों ने त्यागदी हैं अब विवाह के दिन वेश्या बुलाईगयी स्त्री प्रायः बुद्धिहीन होती हैं न मालूम किसी बुद्धिहीनने उसकी बुद्धि हरके नाच तमाशे की ठहरादी।

घरके पुरुषाओं तथा भ्राताओं की जो इन चार बातों के विरोधी हैं कुछ परवाह न की गयी। इसलिये यह लोग इस विवाह जौनार आदि में सम्मिलित न हुए।

शोक है उन लोगों की बुद्धिपर जिन्होंने ऐसे प्रतिष्ठित घर में यह कार्य्य कराया। बालकों की माता बहुत योग्य भोली प्रकृति की धर्मात्मा स्त्री है उस भोले स्वभाव के हेतु यह कार्य्य हुआ- घर के पुरुषा और भाई लोग अपनी प्रतिज्ञा पर दृढ़ रहे ऐसाही

सबको उचित है इस अधर्मरूपी चारबातों से धन को बचा के अपने यजमानों के दान को कुटुम्ब पालन तथा सतमार्ग में लगाना चाहिये और विवाहादि अवसरों में यह बातें सदा को त्याग देनी चाहिये और भी और २ कुरीति समझी जावें उन्हें शीघ्रही निकालना उचित है और अपने २ तीर्थों में विद्या का प्रचार तथा अपनी सन्तानों को कर्मकाण्ड शिक्षा दिलाकर विद्यामृत पिलावें और कुसंग रूपी विष के प्याले से बचावें जिससे भारत में तीर्थ-पुरोहितों का यश पूर्ववत् फैलजावे यही निवेदन है ।

इति शुभम् ॥

श्रीमान् पं० ताराचन्दजी के बनाये हुए ट्रैक्टों की सूचना ।

(१) श्री हरिद्वार दर्पण
(२) राजभक्ति
(३) हिन्दू सूर्य्य श्री १०८ महाराणा जी का शुभागमन
(४) कलकत्ता ऋषिकुल का स्पीच
(५) धर्माधर्म विचार

इश्तहार ॥

ट्रैट नम्बर ८

१ हरिद्वार दर्पण ३ बार

२ म्यूनिसिपलटी के कामोंकी रिपोर्ट

३ मेले अर्ध कुम्भी की रिपोर्ट

४ राज भक्ती २ बार

५ शुभागमन श्री १०८ महाराना उदयपुर

६ कलकत्ता स्पीच

७ श्री हरिद्वारजी की पुरानी नई दसा (छपने गई है लखनऊ प्रेस में)

८ धर्माधर्म विचार

९ विवाह वर्णन (तयार होगया है अब छपने जायगा यह किताव विचित्र रूपसे वनी है जिस अन्दरसादी की खुशी और पुत्रका विलाप)

पण्डित ताराचन्द शर्मा,

श्रीहरिद्वार कनखल निवासी.